SKPF-Wincompete Test Series 2026

<u>पाठ्य सामग्री -राजस्थान का प्राचीन एवं मध्यकालीन इतिहास</u>

टेस्ट 01- राजस्थान इतिहास (प्राचीन एवं मध्यकालीन)

राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल (पुरापाषाण से ताम्रपाषाण तक)

अध्याय 1: राजस्थान का पाषाण काल (पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण काल)

1. प्रस्तावना: राजस्थान की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि
राजस्थान का इतिहास मानव सभ्यता के उदय के साथ ही प्रारंभ हो जाता है। भू-वैज्ञानिक प्रमाणों के अनुसार, पश्चिमी राजस्थान जहाँ आज थार का मरुस्थल है, प्राचीन काल में सरस्वती और दृषद्वती जैसी विशाल नदियों से सिंचित था। इन्ही नदियों के किनारे मानव सभ्यता का बीजारोपण हुआ।
प्रागैतिहासिक काल को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया गया है:
* पुरापाषाण काल (Paleolithic Age)
* मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age)
* नवपाषाण काल (Neolithic Age)

2. पुरापाषाण काल (Paleolithic Age in Rajasthan)

राजस्थान में पुरापाषाण कालीन अवशेषों की खोज का श्रेय सर्वप्रथम सी.ए. हैकट (C.A. Hackett) को जाता है, जिन्होंने 1870 ई. में जयपुर और इन्द्रगढ़ (बूंदी) से पत्थर की बनी 'हस्त कुठार' (Hand-axe) खोजी थी।

A. निम्न पुरापाषाण काल (Lower Paleolithic)

* प्रमुख क्षेत्र: डीडवाना (नागौर), जायल, चित्तौड़गढ़ (गंभीरी व बेड़च नदी घाटी), और कोटा।
* उपकरण: इस काल का मानव मुख्य रूप से क्वार्टजाइट (Quartzite) पत्थर के कुल्हाड़े (Axes), गंडासे (Choppers) और खंडक (Cleavers) का उपयोग करता था।
* विशेषता: डीडवाना के समीप 'सिंगी तालाब' से इस काल के सबसे पुराने साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

B. मध्य पुरापाषाण काल (Middle Paleolithic)

* इस काल में पत्थरों के प्रकार में बदलाव आया। अब जैस्पर, चर्ट और फ्लिंट जैसे बारीक अनाज वाले पत्थरों का उपयोग होने लगा।
* लूनी बेसिन: राजस्थान में मध्य पुरापाषाण काल के सर्वाधिक अवशेष पश्चिमी राजस्थान की लूनी नदी घाटी में मिले हैं। प्रसिद्ध पुरातत्वविद् वी.एन. मिश्र (V.N. Misra) ने इसे 'लूनी उद्योग' (Luni Industry) की संज्ञा दी है।

C. उच्च पुरापाषाण काल (Upper Paleolithic)

* इस काल में उपकरण अधिक सूक्ष्म और धारदार हो गए थे जिन्हें 'ब्लेड' (Blades) कहा जाता था।
* प्रमुख स्थल: चित्तौड़गढ़, हम्मीरगढ़ और जहाजपुर (भीलवाड़ा)।

3. मध्यपाषाण काल (Mesolithic Age): राजस्थान का संक्रमण काल

मध्यपाषाण काल में मानव शिकार के साथ-साथ पशुपालन की ओर प्रवृत्त होने लगा था। इस काल की सबसे बड़ी विशेषता सूक्ष्म पाषाण उपकरण (Microliths) हैं।
बागोर (Bagor) - सबसे महत्वपूर्ण स्थल
बागोर भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के किनारे स्थित है। इसका उत्खनन 1967-70 ई. में वी.एन. मिश्र द्वारा किया गया।
* पशुपालन के साक्ष्य: बागोर से भारत में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त हुए हैं (लगभग 5000-4000 ई.पू.)।

* महासत्यों का टीला: यहाँ स्थित टीले को 'महासत्यों का टीला' कहा जाता है।
* उपकरण: यहाँ से भारी मात्रा में माइक्रोलिथ्स और तांबे के छेद वाली सुई प्राप्त हुई है।

तिलवाड़ा (Tilwara)

यह बाड़मेर (वर्तमान बालोतरा जिला) में लूनी नदी के तट पर स्थित है। यहाँ से मध्यपाषाण कालीन संस्कृति के साथ-साथ पशुपालन और अग्नि कुंड के साक्ष्य भी मिले हैं।

4. विश्लेषण: राजस्थान के पाषाण काल का महत्व

राजस्थान का पाषाण काल केवल पत्थरों के औजारों तक सीमित नहीं है। यह मानव के 'खाद्य संग्राहक' (Food Gatherer) से 'खाद्य उत्पादक' (Food Producer) बनने की यात्रा का गवाह है। बागोर जैसे स्थलों से प्राप्त प्रमाण यह सिद्ध करते हैं कि राजस्थान का मध्यवर्ती भाग दक्षिण-पूर्व एशिया में पशुपालन की शुरुआती कड़ियों में से एक था। यहाँ की भू-आकृतिक संरचना ने आदिमानव को नदियों के किनारे प्राकृतिक **सुरक्षा प्रदान की थी।**

5. महत्वपूर्ण तथ्य(Important Notes)

* वर्तमान प्रशासनिक पुनर्गठन के अनुसार, डीडवाना अब स्वतंत्र जिला है। पुरानी पुस्तकों में इसे नागौर में बताया गया है।

* कुछ स्रोतों में पुरापाषाण काल की तिथि में भिन्नता मिलती है, लेकिन आधिकारिक रूप से डॉ. गोपीनाथ शर्मा के अनुसार राजस्थान में मानव सभ्यता का उदय आज से लगभग 2 लाख वर्ष पूर्व माना जाता है।

6. प्रमुख स्थल और संबंधित नदियाँ (सारणी)

स्थल - जिला (नवीनतम) - नदी घाटी - प्रमुख खोज

बागोर - भीलवाड़ा - कोठारी - पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य
तिलवाड़ा - बालोतरा (पूर्व बाड़मेर) - लूनी - माइक्रोलिथ्स एवं अग्निकुंड

डीडवाना - डीडवाना-कुचामन - लूनी बेसिन - निम्न पुरापाषाण कालीन औजार .

विराट नगर - कोटपूतली-बहरोड़ (पूर्व जयपुर) - बाणगंगा - पुरापाषाण कालीन साक्ष्य

अध्याय 1: राजस्थान का पाषाण काल (पुरापाषाण एवं मध्यपाषाण काल) – पुरातात्विक साक्ष्य एवं खोजें

प्रथम खोज: हस्त कुठार (1870 ई.)

सी.ए. हैकट (C.A. Hackett) द्वारा जयपुर-इन्द्रगढ़ क्षेत्र से खोजा गया प्रथम पुरापाषाण उपकरण।

निम्न पुरापाषाण काल: डीडवाना (नागौर)

सिंगी तालाव से प्राप्त क्वार्टजाइट उपकरण। राजस्थान में मानव सभ्यता के प्राचीनतम साक्ष्य (लगभग 2 लाख वर्ष पूर्व)।

मध्य पुरापाषाण काल: 'लूनी उद्योग'

पुरातत्वविद वी.एन. मिश्र द्वारा परिभाषित। लूनी बेसिन में जैस्पर व चर्ट पत्थरों के उपकरणों की प्रधानता।

मध्यपाषाण काल: बागोर (भीलवाड़ा) - 'महासत्यों का टीला'

उत्खननकर्ता: वी.एन. मिश्र (1967-70)। भारत में 'पशुपालन' के प्राचीनतम लिखित साक्ष्य प्राप्त (5000-4000 ई.पू.)।

सूक्ष्म पाषाण उपकरण (Microliths) एवं तिलवाड़ा

बागोर व तिलवाड़ा (बाड़मेर) से प्राप्त माइक्रोलिथ्स, तांबे की सुई और अग्निकुंड के प्रमाण। खाद्य संग्राहक से उत्पादक बनने का संक्रमण।

अध्याय 2: नवपाषाण एवं ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियाँ (कालीबंगा, आहड़, गणेश्वर एवं अन्य)

यह सामग्री डॉ. गोपीनाथ शर्मा, हुकुम चंद जैन और राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (RBSE) के प्रामाणिक तथ्यों पर आधारित है।

1. नवपाषाण काल (Neolithic Age): कृषि एवं स्थिर जीवन का प्रारंभ

राजस्थान में नवपाषाण काल के साक्ष्य पुरापाषाण की तुलना में कम स्पष्ट हैं, लेकिन यह वह काल था जब मानव ने शिकार छोड़कर **कृषि और स्थाई बस्तियां** बसाना शुरू किया।

- **विशेषता:** पत्थर के औजार अब अधिक चिकने और पॉलिशदार थे।
- **प्रमुख क्षेत्र:** चित्तौड़गढ़ (हम्मीरगढ़), भीलवाड़ा (बागोर का ऊपरी स्तर) और अजमेर के कुछ क्षेत्र।

2. ताम्रपाषाण काल एवं ताम्रयुगीन सभ्यताएँ

राजस्थान 'ताम्रयुगीन सभ्यताओं' का केंद्र रहा है। यहाँ तांबे की प्रचुरता ने आदिमानव को धातु युग में प्रवेश कराया।

A. गणेश्वर सभ्यता (Ganeshwar Culture): 'ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी'

- **स्थान:** यह **नीम का थाना** (पूर्व में सीकर) जिले में **कांतली नदी** के उद्गम पर स्थित है।
- **खोज व उत्खनन:** इसकी खोज **1972 ई.** में **रतन चंद्र अग्रवाल (R.C. Agrawal)** ने की थी।
- **काल:** कार्बन-14 पद्धति के अनुसार इसका समय लगभग **2800 ई.पू.** माना जाता है।
- **विशेषताएँ:**
    - यहाँ से प्राप्त तांबे के उपकरणों में **99% तांबा** मिला है, जो इसकी शुद्धता दर्शाता है।
    - **मछली पकड़ने का कांटा:** यहाँ से तांबे का मछली पकड़ने का कांटा मिला है, जिससे सिद्ध होता है कि कांतली नदी उस समय बारहमासी थी और यहाँ के लोग मांसाहारी भी थे।
    - **निर्यात:** यहाँ से सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा व मोहनजोदड़ो) को तांबा निर्यात किया जाता था।
    - **भवन:** यहाँ मकान पत्थरों के बनाए जाते थे (ईंटों के साक्ष्य नहीं मिले हैं)।

B. आहड़ सभ्यता (Ahar Culture): 'बनास संस्कृति'

- **स्थान:** उदयपुर में **आयड़ (बेड़च) नदी** के किनारे।
- **प्राचीन नाम:** इसे प्राचीन शिलालेखों में **'ताम्रवती नगरी'** कहा गया है। 10वीं-11वीं शताब्दी में इसे **'आघाटपुर'** या 'आघट दुर्ग' के नाम से जाना जाता था। स्थानीय लोग इसे **'धूलकोट'** (रेत का टीला) कहते हैं।
- **उत्खनन:** सर्वप्रथम **1953 ई.** में **अक्षय कीर्ति व्यास** ने, तत्पश्चात **रत्नचंद्र अग्रवाल** और **एच.डी. सांकलिया** ने इसका उत्खनन किया।
- **विशेषताएँ:**
    - **बनास संस्कृति:** बनास नदी घाटी में फैले होने के कारण सांकलिया ने इसे 'बनास संस्कृति' कहा।
    - **तांबा गलाना:** यहाँ तांबा गलाने की भट्टियाँ मिली हैं, जो प्रमाणित करती हैं कि यह तांबा उद्योग का बड़ा केंद्र था।
    - **मृदभांड:** यहाँ **'लाल और काले' (Black and Red Ware)** रंग के मृदभांड मिले हैं, जिन्हें 'उल्टी तपाई' पद्धति से पकाया जाता था।
    - **अनाज संग्रहण:** यहाँ अनाज भरने के बड़े मृदभांड मिले हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में **'गोरे व कोठे'** कहा जाता है।
    - **बनासियन बुल:** यहाँ से मिट्टी की बनी वृषभ (बैल) की मूर्ति मिली है जिसे 'बनासियन बुल' कहा गया है।

C. कालीबंगा सभ्यता (Kalibangan): 'काले रंग की चूड़ियाँ'

- **स्थान:** हनुमानगढ़ जिले में प्राचीन **सरस्वती (वर्तमान घग्घर)** नदी के तट पर।
- **खोज:** इसकी खोज **1952 ई.** में **अमलानंद घोष** ने की थी।
- **उत्खनन: 1961-69** के दौरान **बी.बी. लाल** और **बी.के. थापर** द्वारा।
- **ऐतिहासिक महत्व:** डॉ. दशरथ शर्मा ने कालीबंगा को 'सिंधु घाटी साम्राज्य की **तीसरी राजधानी**' कहा है।
- **प्रमुख साक्ष्य:**
    - **विश्व के प्राचीनतम जुते हुए खेत:** यहाँ से एक साथ दो फसलें (गेहूँ व जौ) उगाने के साक्ष्य मिले हैं।
    - **अग्नि वेदिकाएँ:** यहाँ के चबूतरे पर 7 अग्नि कुंड (हवन कुंड) प्राप्त हुए हैं।

- **भूकंप के साक्ष्य:** विश्व में भूकंप के प्राचीनतम साक्ष्य कालीबंगा से ही मिले हैं।
- **दोहरा परकोटा:** यह दुर्ग और नगर दो अलग-अलग रक्षा प्राचीरों से घिरा था।
- **जल निकासी:** यहाँ लकड़ी की नालियों के प्रयोग के साक्ष्य मिले हैं (अद्वितीय तथ्य)।

3. अन्य महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणिक स्थल

1. **गिलुण्ड (राजसमंद):** यह बनास संस्कृति का केंद्र है। यहाँ से **पकी हुई ईंटों** के प्रयोग के साक्ष्य मिले हैं (आहड़ में कच्ची ईंटें थीं)।
2. **बालाथल (उदयपुर):** यहाँ से **11 कमरों वाला विशाल भवन** और **बुना हुआ कपड़ा** प्राप्त हुआ है।
3. **ओझियाणा (भीलवाड़ा):** यह कोठारी नदी के किनारे स्थित ताम्रयुगीन स्थल है।

4. विश्लेषण: राजस्थान की ताम्रयुगीन अर्थव्यवस्था

राजस्थान की ये सभ्यताएं आत्मनिर्भरता का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जहाँ गणेश्वर 'कच्चे माल (तांबा)' का आपूर्तिकर्ता था, वहीं आहड़ उस तांबे को परिष्कृत कर उपकरण बनाने का औद्योगिक केंद्र था। कालीबंगा का कृषि प्रबंधन (जुते हुए खेत) यह दर्शाता है कि उस काल में राजस्थान में उन्नत सिंचाई और कृषि तकनीक मौजूद थी। इन सभ्यताओं का विनाश नदियों के मार्ग परिवर्तन या जलवायु परिवर्तन (सरस्वती का सूखना) माना जाता है।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- 'गणेश्वर' अब नवीन जिला **नीम का थाना** में आता है, न कि सीकर में। इसी प्रकार **कालीबंगा** हनुमानगढ़ जिले में है (आजादी के समय यह बीकानेर रियासत का हिस्सा था)।
- आहड़ के कालक्रम को लेकर विद्वानों में मतभेद है, परंतु गोपीनाथ शर्मा के अनुसार इसका समृद्ध काल **1900 ई.पू. से 1200 ई.पू.** के मध्य रहा है।

6. परीक्षा हेतु त्वरित तुलनात्मक दृष्टि

विशेषता	कालीबंगा	आहड़	गणेश्वर
मुख्य धातु	कांसा (हड़प्पा कालीन)	तांबा	तांबा (99% शुद्ध)
नदी	घग्घर	आयड़ (बेड़च)	कांतली
ईंटें	कच्ची व पकी ईंटें	पत्थर व कच्ची ईंटें	केवल पत्थर (ईंटें अनुपस्थित)
प्रमुख पहचान	जुते हुए खेत	गोरे-कोठे (मृदभांड)	तांबे के बाण व मछली कांटा

अध्याय 2: राजस्थान की ताम्रपाषाण कालीन संस्कृतियाँ (गणेश्वर, आहड़, कालीबंगा) - पुरातात्विक प्रमाण

गणेश्वर (नीम का थाना) - कांतली नदी

खोज: आर.सी. अग्रवाल (1972)। 99% शुद्ध तांबे के उपकरण व मछली पकड़ने का कांटा। पत्थरों के मकान।

आहड़ (उदयपुर) - 'ताम्रवती नगरी'

आयड़ नदी। उत्खनन: एच.डी. सांकलिया। 'गोरे-कोठे' मृदभांड, 'बनासियन बुल' और तांबा गलाने की भट्टियाँ।

कालीबंगा (हनुमानगढ़) - घग्घर नदी

खोज: अमलानंद घोष (1952)। विश्व के प्राचीनतम 'जुते हुए खेत', 7 अग्नि वेदिकाएं और भूकंप के साक्ष्य।

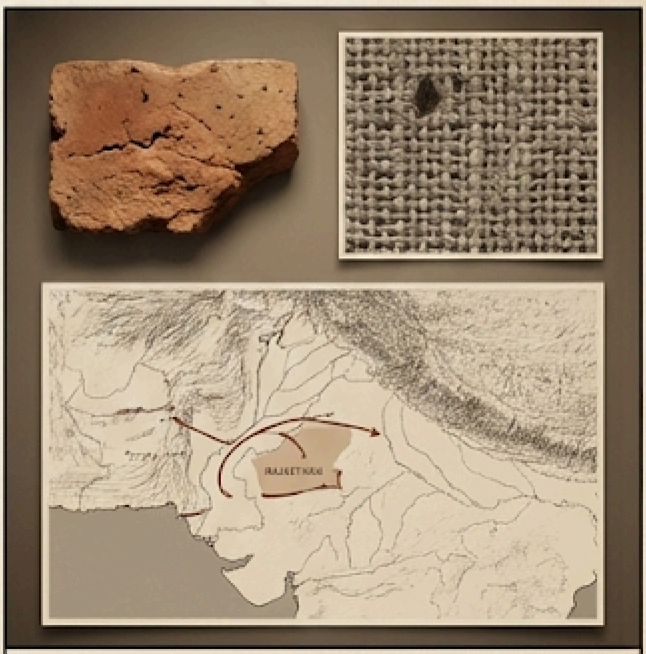

अन्य प्रमुख स्थल एवं व्यापार

गिलुण्ड (पकी ईंटें), बालाथल (बुना कपड़ा)। राजस्थान से हड़प्पा-मोहनजोदड़ो को तांबे का निर्यात।

बिंदु 2: ऐतिहासिक राजस्थान: प्रारंभिक ईस्वी काल के महत्वपूर्ण केंद्र

अध्याय 3: प्रमुख ऐतिहासिक केंद्र (बैराठ, मध्यमिया, रैढ़, नलियासर एवं अन्य)

यह अध्याय मौर्य काल से लेकर गुप्त काल तक के राजस्थान के प्रमुख केंद्रों का आधिकारिक विवरण प्रस्तुत करता है।

1. बैराठ (विराट नगर): मौर्य एवं बौद्ध संस्कृति का संगम
बैराठ राजस्थान का अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है, जो प्राचीन 'मत्स्य जनपद' की राजधानी था।
* **स्थान:** बाणगंगा नदी के मुहाने पर, वर्तमान कोटपूतली-बहरोड़ जिला (पूर्व में जयपुर)।
* **प्रमुख पहाड़ियाँ:** यहाँ उत्खनन तीन मुख्य पहाड़ियों पर किया गया - बीजक की पहाड़ी, भीम जी की डूंगरी, और महादेव जी की डूंगरी।
* **उत्खनन:** 1936-37 ई. में दयाराम साहनी द्वारा, और बाद में 1962-63 में नील रत्न बनर्जी तथा कैलाश नाथ दीक्षित द्वारा।

मुख्य ऐतिहासिक साक्ष्य:
* **भाब्रू शिलालेख (Bhabru Edict)**: 1837 ई. में कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक का शिलालेख खोजा। इसमें अशोक को 'मगध का राजा' बताया गया है और उसके बौद्ध धर्म (बुद्ध, धम्म, संघ) के प्रति आस्था प्रकट होती है। (वर्तमान में यह कोलकाता संग्रहालय में है)।
* **बौद्ध स्तूप एवं मंदिर**: यहाँ से भारत के प्राचीनतम गोलाकार बौद्ध मंदिर (चैत्य) के अवशेष मिले हैं।
* **शंख लिपि**: बैराठ से बड़ी मात्रा में 'शंख लिपि' के प्रमाण मिले हैं, जो अभी तक रहस्यमयी बनी हुई है।
* **हूण आक्रमण:** चीनी यात्री ह्वेनसांग ने बैराठ की यात्रा की थी। उसने यहाँ 8 बौद्ध मठों का उल्लेख किया। कालांतर में हूण शासक मिहिरकुल ने इन मठों को नष्ट कर दिया था।

2. मध्यमिका या नगरी (Madhyamika): शिबि जनपद की राजधानी

* **स्थान**: चित्तौड़गढ़ जिले में बेड़च नदी के किनारे।
* **महत्व**: यह प्राचीन 'शिबि जनपद' की राजधानी थी। यहाँ से 'मझमिकाय शिबि जनपदस' अंकित सिक्के प्राप्त हुए हैं।
* **खोज**: सर्वप्रथम 1872 ई. में कार्लाइल ने इसकी पहचान की और 1904 ई. में डॉ. डी.आर. भण्डारकर ने यहाँ उत्खनन किया।

विशेष उपलब्धियाँ:

* **घोसुण्डी शिलालेख:** नगरी के निकट घोसुण्डी से प्राप्त दूसरी शताब्दी ई.पू. का यह शिलालेख राजस्थान में वैष्णव (भागवत) संप्रदाय से संबंधित प्राचीनतम अभिलेख है।
* यहाँ से प्राप्त अवशेषों में गुप्तकालीन कला के नमूने और मंदिर के साक्ष्य मिले हैं।

3. रैढ़ (Rairh): 'प्राचीन भारत का टाटा नगर'
* **स्थान:** टोंक जिले में ढील नदी के किनारे।
* उत्खनन: 1938-40 ई. में के.एन. पुरी (केदारनाथ पुरी) द्वारा।
* **महत्व:** इसे 'प्राचीन भारत का टाटा नगर' कहा जाता है क्योंकि यहाँ से लोहे के उपकरणों का विशाल भंडार और अत्यधिक मात्रा में प्राचीन सिक्के मिले हैं।

प्रमुख साक्ष्य:
* **सिक्कों का भंडार:** यहाँ से 3075 'आहत' (Punch-marked) चांदी के सिक्के मिले हैं।
* यहाँ से मालव जनपद के सिक्के और 'अपोलोडोटस' का सिक्का भी प्राप्त हुआ है।
* आलीशान भवनों में 'रिंग वेल्स' (घेरादार कुएं) की उपस्थिति इसकी उन्नत नगरीय व्यवस्था को दर्शाती है।

4. नलियासर (सांभर): चौहानों से पूर्व का केंद्र
* **स्थान:** जयपुर ग्रामीण जिला (सांभर झील के पास)।
* **उत्खनन:** दयाराम साहनी और कर्नल हेंडले द्वारा।
* **काल:** यहाँ प्रतिहार काल, गुप्त काल और कुषाण काल के अवशेष मिलते हैं।
* **मुख्य खोज:** यहाँ से कुषाण शासक हुविष्क के सिक्के, गुप्तकालीन मृण्मूर्तियाँ और चौहान युग के पूर्व की बस्तियों के साक्ष्य मिले हैं।

5. अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक केंद्र

स्थल	जिला	प्रमुख विशेषता
नगर (कर्कोट नगर)	टोंक	मालव जनपद की राजधानी, यहाँ से 'मालवानां जयः' अंकित सिक्के मिले।
नोह	भरतपुर	यहाँ से विशालकाय 'यक्ष' की मूर्ति (जाख बाबा) मिली है (कुषाण काल)।
भीनमाल (श्रीमाल)	जालौर	विदेशी यात्री ह्वेनसांग ने इसे 'पी-लो-मो-लो' कहा। यहाँ कवि माघ की जन्मभूमि है।
सुनारी	नीम का थाना	यहाँ से लोहे गलाने की प्राचीनतम भट्टी मिली है।

6. विश्लेषण: राजस्थान का प्रारंभिक ऐतिहासिक संक्रमण

प्रारंभिक ईस्वी काल में राजस्थान जनपदीय शासन व्यवस्था का मुख्य केंद्र था। मालव, शिबि, और मत्स्य जैसे जनपदों ने न केवल अपनी स्वायत्तता की रक्षा की, बल्कि शक और कुषाण जैसे विदेशी आक्रमणकारियों का भी प्रतिरोध किया। बैराठ जहाँ धार्मिक (बौद्ध) सहिष्णुता का प्रतीक था, वहीं रैढ़ और नगर जैसे केंद्र आर्थिक और व्यापारिक समृद्धि के सूचक थे। इस काल में राजस्थान 'मध्यमिका' के माध्यम से दक्षिण भारत और गुजरात के व्यापारिक मार्गों से जुड़ा हुआ था।

7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

* बैराठ (विराट नगर) अब कोटपूतली-बहरोड़ जिले में है। सुनारी नीम का थाना जिले में है। सांभर/नलियासर जयपुर ग्रामीण जिले का हिस्सा है।

* अशोक के भाब्रू शिलालेख की वर्तमान स्थिति को लेकर भ्रम रहता है; स्पष्ट रहे कि यह वर्तमान में एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता के संग्रहालय में सुरक्षित है, न कि राजस्थान में।

* ऐतिहासिक साक्ष्य: मौर्य काल के बाद राजस्थान में 'मालव' और 'यौधेय' गणराज्यों का पुनरुत्थान हुआ, जिसकी पुष्टि इनके सिक्कों और 'विजयगढ़ (भरतपुर)' के स्तंभ लेखों से होती है।

अध्याय 3: राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक केंद्र (मौर्य से गुप्त काल) - पुरातात्विक साक्ष्य

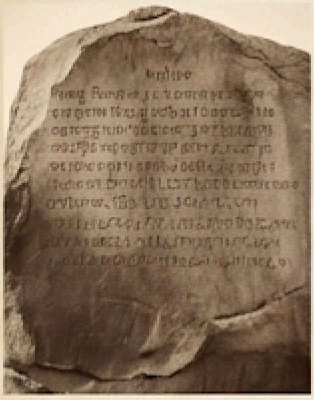
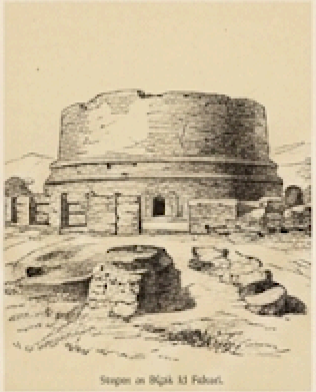

बैराठ (विराट नगर) - मत्स्य जनपद राजधानी

भाब्रू शिलालेख: अशोक द्वारा बौद्ध धर्म (बुद्ध, धम्म, संघ) में आस्था प्रकट। गोलाकार बौद्ध चैत्य के अवशेष। शंख लिपि के प्रमाण।

मध्यमिका (नगरी, चित्तौड़गढ़) - शिबि जनपद

शिबि जनपद के सिक्के। **घोसुण्डी शिलालेख** (द्वितीय शताब्दी ई.पू.): राजस्थान में वैष्णव संप्रदाय का प्राचीनतम अभिलेख।

रैढ़ (टोंक) - ढील नदी

लौह सामग्री का विशाल भंडार। 3075 चांदी के 'आहत' सिक्के, मालव जनपद और अपोलोडोटस के सिक्के प्रात।

नलियासर (सांभर) - जयपुर ग्रामीण

कुषाण, गुप्त और प्रतिहार कालीन अवशेष। हुविष्क के सिक्के और गुप्तकालीन कलात्मक मृण्मूर्तियाँ।

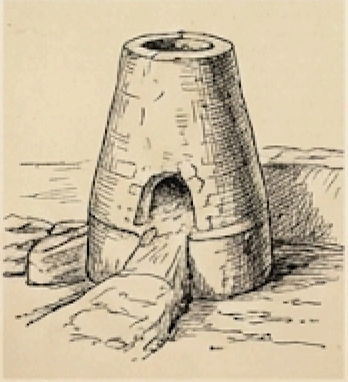

अन्य प्रमुख केंद्र

नोह: कुषाण कालीन विशाल यक्ष मूर्ति।
सुनारी: लोहा गलाने की प्राचीनतम भट्टी।
नगरः मालव जनपद के सिक्के ('मालवानां जयः')।

बिंदु 3: प्रमुख राजवंश (शासक व उनकी उपलब्धियां)

अध्याय 4: गुहिल राजवंश एवं गुर्जर-प्रतिहार राजवंश

यह अध्याय डॉ. गोपीनाथ शर्मा और हुकुम चंद जैन की प्रमाणिक पुस्तकों के आधार पर इन दो महान राजवंशों के अभ्युदय और उनके प्रशासनिक योगदान का विश्लेषण करता है।

1. गुहिल राजवंश (मेवाड़ का गौरव)

मेवाड़ का गुहिल वंश संसार के प्राचीनतम राजवंशों में से एक माना जाता है, जिसने लगभग 1300 वर्षों तक एक ही प्रदेश पर शासन किया।

A. उत्पत्ति एवं प्रारंभिक इतिहास

- **उत्पत्ति के सिद्धांत:** * **अबुल फजल:** ईरान के बादशाह नोशेखां आदिल की संतान मानते हैं।
  - **कर्नल टॉड:** इन्हें वल्लभी (गुजरात) के शासक शिलादित्य का वंशज मानते हैं।
  - **डॉ. गोपीनाथ शर्मा:** 'चाटसू अभिलेख' और 'आहाड़ अभिलेख' के आधार पर इन्हें **ब्राह्मण** (विप्र कुल) मानते हैं।
- **संस्थापक:** 566 ई. के लगभग **गुहिल** ने इस वंश की नींव डाली।

B. प्रतापी शासक एवं उनकी उपलब्धियां

1. बप्पा रावल (कालभोज):

- **समय:** 734 ई. में चित्तौड़ के शासक **मानमोरी** को हराकर अधिकार किया।
- **उपाधियाँ:** हिंदू सूरज, राजगुरु, चकवे।
- **योग्यता:** बप्पा रावल ने मेवाड़ में सर्वप्रथम **सोने के सिक्के** चलाए (115 ग्रेन)। उन्होंने नागदा को अपनी राजधानी बनाया और एकलिंगजी (लकुलीश) मंदिर का निर्माण करवाया।

2. जैत्रसिंह (1213-1253 ई.):

- **भूताला का युद्ध (1227 ई.):** जैत्रसिंह ने दिल्ली के सुल्तान **इल्तुतमिश** को पराजित किया।
- **महत्व:** इन्होंने चित्तौड़ को अपनी राजधानी बनाया। डॉ. दशरथ शर्मा ने इनके शासनकाल को 'मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल' कहा है।

3. रावल रतन सिंह (1302-1303 ई.):

- यह रावल शाखा के अंतिम शासक थे।
- **अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण (1303 ई.):** चित्तौड़ का प्रथम साका हुआ। रानी पद्मिनी ने जौहर किया और गोरा-बादल वीरगति को प्राप्त हुए।

2. गुर्जर-प्रतिहार राजवंश (द्वारपाल की भूमिका)

गुर्जर-प्रतिहारों ने 8वीं से 10वीं शताब्दी तक उत्तर भारत को अरब आक्रमणकारियों से बचाकर 'रक्षक' की भूमिका निभाई।

A. शाखाएँ एवं विस्तार

मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की **26 शाखाओं** का उल्लेख किया है, जिनमें **मंडोर** और **भीनमाल** प्रमुख थीं।

B. प्रमुख शासक

1. नागभट्ट प्रथम (स्थापत्य व विस्तार):

- इन्होंने जालौर-अवंतिका शाखा की स्थापना की।
- **मलेच्छों का नाशक:** ग्वालियर प्रशस्ति में इन्हें 'नारायण' और 'मलेच्छों का नाशक' (अरबों को हराने के कारण) कहा गया है।

2. वत्सराज (साम्राज्यवादी युग का प्रारंभ):

- इन्हें 'रणहस्तिन' (युद्ध का हाथी) कहा जाता था।
- इन्होंने **त्रिकोणीय संघर्ष (Tripartite Struggle)** की शुरुआत की (पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूटों के मध्य)।

3. नागभट्ट द्वितीय:

- इन्होंने 816 ई. में कन्नौज के शासक चक्रायुध को हराकर **कन्नौज को प्रतिहारों की स्थाई राजधानी** बनाया।
- इन्होंने गंगा में जल समाधि ली थी।

4. मिहिर भोज (सर्वाधिक प्रतापी शासक):

- **उपाधियाँ:** आदि वराह, प्रभास।
- अरब यात्री **सुलेमान** ने इन्हें 'इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु' और 'काफिरों का राजा' कहा।
- इनके समय प्रतिहार साम्राज्य अपनी पराकाष्ठा पर था।

3. विश्लेषण: प्रतिरोध और सांस्कृतिक संरक्षण

गुहिल और प्रतिहार दोनों राजवंशों ने विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध ढाल का कार्य किया। जहाँ मेवाड़ के गुहिलों ने स्थानीय प्रतिरोध और दुर्ग-स्थापत्य (जैसे चित्तौड़) को प्राथमिकता दी, वहीं प्रतिहारों ने कन्नौज को केंद्र बनाकर एक विशाल अखिल भारतीय साम्राज्य की परिकल्पना को साकार किया। प्रतिहारों की 'मारु-गुर्जर' शैली ने राजस्थान के मंदिर स्थापत्य (ओसियां, आभानेरी) को विश्वव्यापी पहचान दिलाई।

4. तुलनात्मक अध्ययन सारणी

आधार	गुहिल राजवंश	गुर्जर-प्रतिहार राजवंश
मुख्य केंद्र	मेवाड़ (नागदा, चित्तौड़)	मंडोर, भीनमाल, कन्नौज
प्रसिद्ध कुल	सूर्यवंशी (हिंदुआ सूरज)	लक्ष्मण के वंशज (प्रतिहार)
स्थापत्य शैली	पंचायतन व दुर्ग स्थापत्य	मारु-गुर्जर शैली (मंदिर निर्माण)
विदेशी प्रतिरोध	अलाउद्दीन खिलजी (सल्तनत काल)	अरब आक्रमणकारी (जैसे जुनैद)

अध्याय 4: राजस्थान के प्रमुख राजवंश (गुहिल एवं गुर्जर-प्रतिहार) - ऐतिहासिक साक्ष्य एवं उपलब्धियां

(115 grains)

गुहिल वंश (मेवाड़) - बप्पा रावल (कालभोज)

734 ई. में चित्तौड़ विजय। नागदा राजधानी। एकलिंगजी मंदिर निर्माण। मेवाड़ में सर्वप्रथम सोने के सिक्के चलाए।

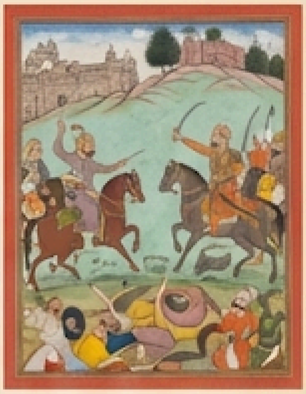

रावल जैत्रसिंह (l213-1253 ई.) - चित्तौड़ राजधानी

भूताला युद्ध (1227 ई.) में इल्तुतमिश को पराजित किया। चित्तौड़ को राजधानी बनाया। मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्णकाल।

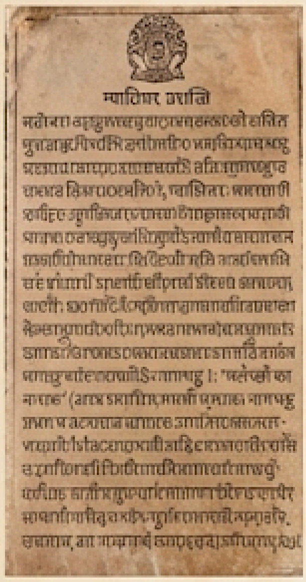

गुर्जर-प्रतिहार वंश - नागभट्ट प्रथम व वत्सराज (ग्वालियररू, प्रशस्ति)

नागभट्ट l: 'मलेच्छों का नाशक' (अरबों को हराया), ग्वालियर प्रशस्ति। वत्सराज: 'रणहस्तिन', त्रिकोणीय संघर्ष की शुरुआत। मारु-गुर्जर मंदिर शैली।

मिहिर भोज (आदि वराह, प्रभास)

प्रतिहार साम्राज्य की पराकाष्ठा। अरब यात्री सुलेमान ने 'इस्लाम का सबसे बड़ा शत्रु' कहा। कन्नौज स्थाई राजधानी।

विश्लेषण: प्रतिरोध व सांस्कृतिक संरक्षण

गुहिल: स्थानीय प्रतिरोध, दुर्ग स्थापत्य (चित्तौड़)। प्रतिहार: अखिल भारतीय साम्राज्य (कन्नौज), अरबों से रक्षा, मारु-गुर्जर शैली।

अध्याय 5: चौहान एवं परमार राजवंश

यह अध्याय शाकम्भरी, अजमेर, रणथंभौर और जालौर के चौहानों के साथ-साथ आबू और वागड़ के परमार शासकों की राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियों का आधिकारिक विवरण प्रदान करता है।

1. चौहान (चाहमान) राजवंश (The Chauhan Dynasty)

चौहानों की उत्पत्ति के विषय में **पृथ्वीराज रासो** (चंद्रबरदाई) 'अग्निकुंड' का सिद्धांत देता है, जबकि **बिजोलिया शिलालेख (1170 ई.)** इन्हें 'वत्सगोत्रीय ब्राह्मण' बताता है।

A. शाकम्भरी एवं अजमेर के चौहान

1. **वासुदेव चौहान (551 ई.):** इन्होंने सपादलक्ष (सांभर) में चौहान वंश की नींव डाली और सांभर झील का निर्माण करवाया।
2. **अजयराज (1113 ई.):** इन्होंने **अजयमेरु (अजमेर)** नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया। इन्होंने 'अजयप्रिय द्रम्म' नामक चांदी के सिक्के चलाए।
3. **अर्णोराज (आनाजी):** अजमेर में **आना सागर झील** और पुष्कर में वराह मंदिर का निर्माण करवाया।
4. **विग्रहराज IV (बीसलदेव):** * इनका शासनकाल **'चौहानों का स्वर्णकाल'** कहलाता है।
    - इन्होंने **'हरिकेली'** नाटक की रचना की।
    - अजमेर में एक **संस्कृत पाठशाला** बनवाई, जिसे बाद में कुतुबुद्दीन ऐबक ने **'अढाई दिन का झोंपड़ा'** (मस्जिद) में परिवर्तित कर दिया।
5. **पृथ्वीराज चौहान III (1177-1192 ई.):**
    - **उपाधियाँ:** 'राय पिथौरा' और 'दल पुंगल' (विश्व विजेता)।
    - **तराइन का प्रथम युद्ध (1191):** मुहम्मद गौरी को पराजित किया।
    - **तराइन का द्वितीय युद्ध (1192):** गौरी से पराजित हुए, जिससे भारत में मुस्लिम शासन का मार्ग प्रशस्त हुआ।
    - **दरबारी विद्वान:** चंद्रबरदाई (पृथ्वीराज रासो), जयानक (पृथ्वीराज विजय), वागीश्वर और जनार्दन।

B. रणथंभौर के चौहान

- संस्थापक: **गोविंदराज** (पृथ्वीराज III का पुत्र) ने 1194 ई. में नींव डाली।
- **हम्मीर देव चौहान (1282-1301):** "सिंह सवन सत्पुरुष वचन, कदली फलत इक बार। तिरिया तेल हम्मीर हठ, चढ़े न दूजी बार॥"
    - हम्मीर ने अलाउद्दीन खिलजी के विद्रोही मंगोल सेनापति **मुहम्मद शाह** को शरण दी।
    - **1301 ई.** में रणथंभौर का युद्ध हुआ, जिसमें राजस्थान का **प्रथम साका** (रानी रंगदेवी के नेतृत्व में जौहर) हुआ।

C. जालौर के चौहान (सोनगरा शाखा)

- संस्थापक: कीर्तिपाल चौहान (कित्तू एक महान राजा)।
- **कान्हड़देव चौहान:** अलाउद्दीन खिलजी ने 1311 ई. में जालौर पर आक्रमण किया। दहिया बीका के विश्वासघात के कारण दुर्ग का पतन हुआ। जालौर का नाम बदलकर **'जलालाबाद'** रखा गया।

2. परमार राजवंश (The Paramara Dynasty)

परमारों का मूल स्थान आबू (अर्बुद प्रदेश) माना जाता है। इनका आदर्श वाक्य था- 'पृथ्वी परमारों की है'।

A. आबू के परमार

- संस्थापक: **धूमराज**।
- **धारावर्ष परमार:** इस वंश का सबसे प्रतापी शासक। वह शब्दभेदी बाण चलाने में निपुण था। उसने तुर्कों के विरुद्ध युद्ध में गुजरात के शासकों की सहायता की थी।
- **सांस्कृतिक योगदान:** आबू के दिलवाड़ा मंदिरों के निर्माण में परमार शासकों और उनके मंत्रियों (जैसे विमल शाह और वस्तुपाल-तेजपाल) का महत्वपूर्ण सहयोग रहा।

B. वागड़ के परमार (डूंगरपुर-बांसवाड़ा)

- इनकी राजधानी **'अर्थूणा'** (बांसवाड़ा) थी। यहाँ के मंदिर स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।
- मालवा के राजा मुंज और राजा भोज भी इसी वंश के महान शासक थे, जिनका प्रभाव राजस्थान के कुछ हिस्सों (चित्तौड़) पर रहा। भोज ने चित्तौड़ में **त्रिभुवन नारायण मंदिर** बनवाया था।

3. विश्लेषण: चौहानों का पतन और तुर्क आक्रमण

चौहान वंश उत्तर भारत का अंतिम शक्तिशाली हिंदू साम्राज्य था। पृथ्वीराज III की पराजय केवल एक सैन्य हार नहीं थी, बल्कि इसने भारत की राजनीतिक दिशा बदल दी। चौहानों की हार का मुख्य कारण आपसी वैमनस्य (जयचंद गढ़वाल से विवाद) और सामंती सेना पर अत्यधिक निर्भरता थी। हालांकि, हम्मीर और कान्हड़देव के प्रतिरोध ने यह सिद्ध किया कि चौहानों में 'अस्मिता' के लिए बलिदान देने की परंपरा कूट-कूट कर भरी थी।

4. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **महत्वपूर्ण तथ्य: अढाई दिन का झोंपड़ा** के खंभों पर आज भी उस संस्कृत पाठशाला के अवशेष और 'हरिकेली' नाटक की पंक्तियाँ उत्कीर्ण हैं।
- **नोट (भूगोल):** जालौर के विभाजन के बाद अब **सांचौर** नया जिला है, परंतु ऐतिहासिक जालौर दुर्ग वर्तमान जालौर जिले में ही स्थित है। रणथंभौर सवाई माधोपुर जिले में है।
- पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के स्थान को लेकर मतभेद है। चंद्रबरदाई के अनुसार उन्हें गजनी ले जाया गया, जबकि हसन निजामी (ताज-उल-मासिर) के अनुसार उनकी मृत्यु अजमेर में हुई। आधिकारिक शोध ग्रंथ दोनों मतों का उल्लेख करते हैं।

5. प्रमुख युद्ध एवं संधियां (त्वरित संदर्भ)

युद्ध	वर्ष	पक्ष	परिणाम
तराइन I	1191	पृथ्वीराज III vs गौरी	पृथ्वीराज विजयी
तराइन II	1192	पृथ्वीराज III vs गौरी	गौरी विजयी
रणथंभौर युद्ध	1301	हम्मीर vs अलाउद्दीन	अलाउद्दीन विजयी (प्रथम साका)
जालौर युद्ध	1311	कान्हड़देव vs अलाउद्दीन	अलाउद्दीन विजयी

अध्याय 5: चौहान एवं परमार राजवंश - ऐतिहासिक साक्ष्य एवं उपलब्धियां

पृथ्वीराज चौहान III (1177-1192 ई.) - राय पिथौरा, दल पुंगल

तराइन युद्ध (1191/1192)। दरबारी: चंद्रबरदाई। अढ़ाई दिन का झोंपड़ा (पूर्व संस्कृत पाठशाला) में हरिकेली नाटक के अंश।

हम्मीर देव चौहान (रणथंभौर, 1282-1301) - 'हम्मीर हठ'

अलाउद्दीन के विद्रोही को शरण। 1301 ई. में रणथंभौर का युद्ध और राजस्थान का प्रथम साका।

कान्हड़देव चौहान (जालौर, 1311 ई.) - सोनगरा शाखा

1311 ई. में अलाउद्दीन का आक्रमण। दहिया बीका का विश्वासघात। जालौर का पतन (जलालाबाद नाम)।

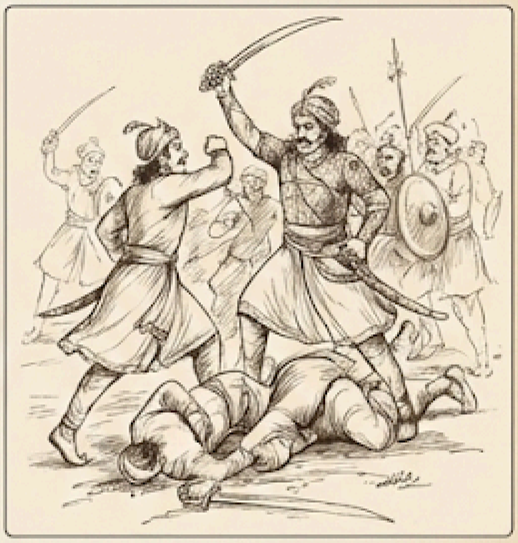

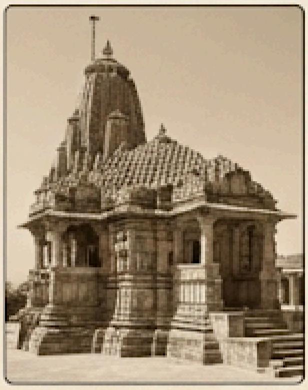

परमार राजवंश (आबू व मालवा) - स्थापत्य कला

आबू के दिलवाड़ा मंदिर (विमल वसही)। मालवा के राजा भोज द्वारा चित्तौड़ में त्रिभुवन नारायण मंदिर का निर्माण।

वागड़ के परमार (अर्थूणा)

राजधानी अर्थूणा। 11वीं-12वीं सदी के मंदिर स्थापत्य कला के उत्कृष्ट केंद्र।

अध्याय 6: सिसोदिया, राठौड़ और कछवाहा राजवंश

यह अध्याय मेवाड़ के गौरवशाली सिसोदिया वंश, मारवाड़ के प्रतापी राठौड़ वंश और आमेर के रणनीतिक कछवाहा राजवंश के राजनीतिक उत्कर्ष और स्थापत्य योगदान का विश्लेषण करता है।

1. सिसोदिया राजवंश (Mewar's Sisodia Dynasty)

1303 ई. में रावल शाखा के अंत के बाद, **राणा हम्मीर** ने मेवाड़ में सिसोदिया वंश की नींव डाली। इन्हें **'मेवाड़ का उद्धारक'** और कुंभलगढ़ प्रशस्ति में **'विषम घाटी पंचानन'** कहा गया है।

प्रमुख शासक और उपलब्धियाँ:

1. **राणा कुंभा (1433-1468 ई.):**
    - **उपाधियाँ:** अभिनव भरताचार्य, हिंदू सुरताण, हाल गुरु, छाप गुरु।
    - **विजय:** 1437 ई. में **सारंगपुर के युद्ध** में मालवा के महमूद खिलजी को पराजित किया।
    - **स्थापत्य:** विजय की स्मृति में चित्तौड़गढ़ में **विजय स्तंभ** (9 मंजिला, भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश) बनवाया। कवि श्यामलदास के अनुसार, मेवाड़ के 84 में से **32 दुर्गों** का निर्माण कुंभा ने करवाया।
2. **राणा सांगा (संग्राम सिंह):**
    - इन्हें **'सैनिकों का भग्नावशेष'** कहा जाता है क्योंकि इनके शरीर पर 80 घाव थे।
    - **खातोली (1517)** और **बाड़ी (1518)** के युद्धों में इब्राहिम लोदी को हराया।
    - **खानवा का युद्ध (1527):** बाबर के विरुद्ध राजस्थान के सभी राजाओं को 'पाती पेरवण' परंपरा के तहत एकत्रित किया।
3. **महाराणा प्रताप (1572-1597 ई.):**
    - **हल्दीघाटी का युद्ध (18/21 जून 1576):** अकबर के सेनापति मानसिंह के विरुद्ध संघर्ष। अबुल फजल ने इसे 'खमनोर का युद्ध' और बदायूँनी ने 'गोगुन्दा का युद्ध' कहा।
    - **दिवेर का युद्ध (1582):** कर्नल टॉड ने इसे 'मेवाड़ का मैराथन' कहा। प्रताप ने चावण्ड को अपनी आपातकालीन राजधानी बनाया।

2. राठौड़ राजवंश (Rathore Dynasty of Marwar)

राठौड़ों की उत्पत्ति कन्नौज के जयचंद गढ़वाल से मानी जाती है। **राव सीहा** को इस वंश का आदि पुरुष कहा जाता है।

प्रमुख शासक और उपलब्धियाँ:

1. **राव जोधा (1438-1489 ई.):**
    - **1459 ई.** में **जोधपुर** नगर बसाया और चिड़ियाटूँक पहाड़ी पर **मेहरानगढ़ दुर्ग** का निर्माण करवाया।
    - मेवाड़ के साथ 'आंवल-बांवल की संधि' कर सीमा निर्धारण किया।
2. **राव मालदेव (1531-1562 ई.):**
    - इन्हें **'हसमत वाला राजा'** और '52 युद्धों का विजेता' कहा जाता है।
    - **गिरी-सुमेल का युद्ध (1544):** शेरशाह सूरी के विरुद्ध भीषण संघर्ष। शेरशाह ने कहा था- "मैं एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की बादशाहत खो देता।"
3. **राव चंद्रसेन:** इन्हें **'मारवाड़ का प्रताप'** और 'प्रताप का अग्रगामी' कहा जाता है क्योंकि इन्होंने भी अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की।
4. **महाराजा जसवंत सिंह I:** मुगल दरबार के प्रभावशाली मनसबदार। इनकी मृत्यु पर औरंगजेब ने कहा था- "आज कुफ्र (धर्म विरोध) का दरवाजा टूट गया।"

3. कछवाहा राजवंश (Kachwaha Dynasty of Amber/Jaipur)

यह वंश स्वयं को भगवान राम के पुत्र 'कुश' का वंशज मानता है।

प्रमुख शासक और उपलब्धियाँ:

1. **भारमल:** 1562 ई. में अकबर से सांगानेर में भेंट की और अधीनता स्वीकार करने वाले प्रथम राजपूत शासक बने।
2. **मिर्जा राजा मानसिंह I:** अकबर और जहांगीर के सबसे विश्वसनीय सेनापति। इन्होंने काबुल, बिहार और बंगाल की सूबेदारी संभाली। **आमेर दुर्ग** के महलों का निर्माण करवाया।

3. **मिर्जा राजा जयसिंह:** इन्होंने तीन मुगल बादशाहों (जहांगीर, शाहजहाँ, औरंगजेब) की सेवा की। **पुरंदर की संधि (1665)** में शिवाजी महाराज को संधि के लिए विवश किया।
4. **सवाई जयसिंह II:**
    - **18 नवंबर 1727** को **जयपुर** (जयनगर) की स्थापना की। वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य थे।
    - पाँच वेधशालाओं (जंतर-मंतर) का निर्माण करवाया। जयपुर की वेधशाला सबसे बड़ी है (UNESCO सूची में सम्मिलित)।
    - 'जीज मुहम्मदशाही' (नक्षत्रों की सारणी) तैयार करवाई।

4. विश्लेषण: मुगल-राजपूत सहयोग बनाम प्रतिरोध

मध्यकालीन राजस्थान की राजनीति दो धाराओं में बँटी थी। एक ओर मेवाड़ (प्रताप) और मारवाड़ (चंद्रसेन) ने 'प्रतिरोध' की नीति अपनाकर स्वतंत्रता को सर्वोपरि रखा। दूसरी ओर आमेर (कछवाहा) और बीकानेर के राठौड़ों ने 'सहयोग' की नीति अपनाकर मुगलों के साथ प्रशासनिक और सैन्य भागीदारी की। कछवाहों के सहयोग ने राजस्थान को प्रशासनिक स्थिरता और नई कला विधाओं (जैसे जयपुर शैली) से परिचित कराया, जबकि मेवाड़ के प्रतिरोध ने इसे सांस्कृतिक स्वाभिमान का प्रतीक बना दिया।

5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **(हल्दीघाटी तिथि):** डॉ. गोपीनाथ शर्मा हल्दीघाटी युद्ध की तिथि **21 जून 1576** मानते हैं, जबकि अधिकांश अन्य स्रोत और शोधकर्ता **18 जून 1576** को सही मानते हैं। परीक्षा में विकल्प के अनुसार चयन करें।
- **नोट (स्थापत्य): आमेर दुर्ग** हिंदू-मुस्लिम स्थापत्य शैली का सुंदर मिश्रण है, जबकि **मेहरानगढ़** विशुद्ध राजपूत सैन्य वास्तुकला का प्रतीक है।
- **महत्वपूर्ण तथ्य:** सवाई जयसिंह अंतिम हिंदू शासक थे जिन्होंने **'अश्वमेध यज्ञ'** (1740 ई.) करवाया था।

6. प्रमुख सांस्कृतिक एवं साहित्यिक योगदान (सारणी)

शासक	रचना/ग्रंथ	विशेष योगदान
राणा कुंभा	संगीत राज, संगीत मीमांसा	संगीत के ज्ञाता
मिर्जा राजा जयसिंह	बिहारी सतसई (बिहारी द्वारा)	ब्रजभाषा साहित्य
सवाई जयसिंह	जयसिंह कारिका	ज्योतिष एवं खगोल विज्ञान
महाराणा प्रताप	विश्ववल्लभ (चक्रपाणि मिश्र द्वारा)	उद्यान विज्ञान एवं कृषि

अध्याय 6: सिसोदिया, राठौड़ और कछवाहा राजवंश - ऐतिहासिक साक्ष्य एवं उपलब्धियां

राणा कुंभा (1433-1468 ई.) - स्थापत्य व कला

विजय स्तंभ (1437 ई.) निर्माण। 32 दुर्गों के निर्माता। 'संगीत राज' के रचयिता।

महाराणा प्रताप (1572-1597 ई.) - हल्दीघाटी व दिवेर

हल्दीघाटी युद्ध (1576)। दिवेर का युद्ध (1582) - 'मेवाड़ का मैराथन'। चावण्ड राजधानी।

राठौड़ वंश (जोधपुर) - राव जोधा व मालदेव

जोधपुर स्थापना व मेहरानगढ़ (1459 ई.)। राव मालदेव - '52 युद्धों का विजेता', गिरी-सुमेल युद्ध (1544)।

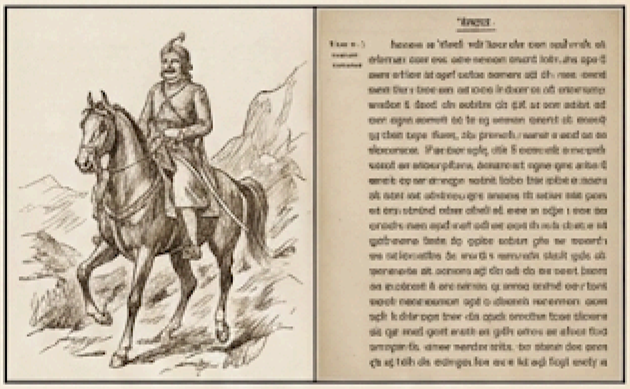

राव चंद्रसेन (मारवाड़ का प्रताप)

अकबर की अधीनता स्वीकार नहीं की। 'प्रताप का अग्रगामी'।

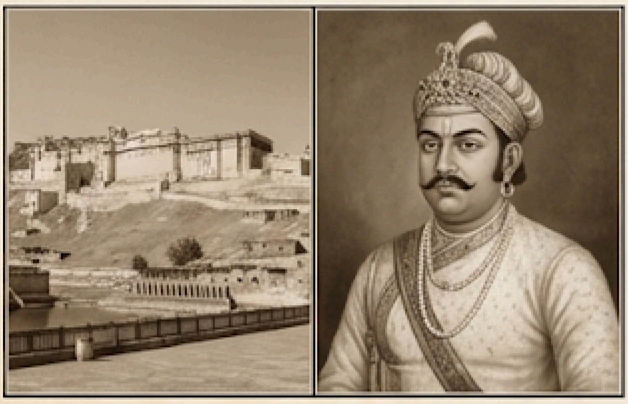

कछवाहा वंश (आमेर) - मिर्जा राजा जयसिंह I

तीन मुगलों की सेवा। पुरंदर की संधि (1665)। आमेर महलों का निर्माण।

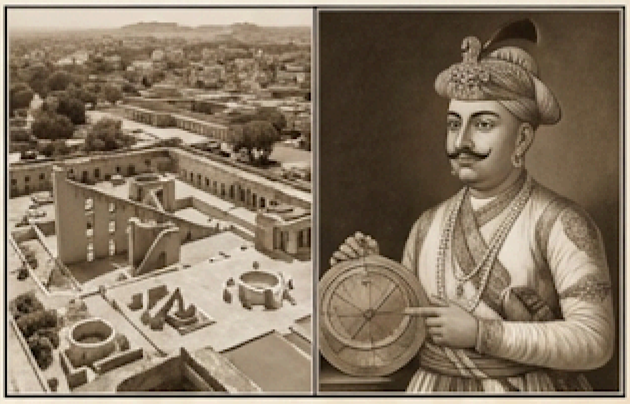

सवाई जयसिंह II (जयपुर) - नगर नियोजन व विज्ञान

जयपुर स्थापना (1727)। जंतर-मंतर (वैधशाला) निर्माण। 'जीज मुहम्मदशाही'।

बिंदु 4: मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था

अध्याय 7: शासन प्रणाली, सामंती व्यवस्था और राजस्व ढांचा

राजस्थान की मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था मुख्य रूप से **'रक्त संबंध'** और **'कुलीय भावना'** पर आधारित थी। मुगलों के संपर्क के बाद इसमें कुछ फारसी तत्वों का समावेश हुआ, जिसे शोधकर्ताओं ने 'सामंती-संघीय' (Feudal-Federal) व्यवस्था कहा है।

1. केंद्रीय प्रशासनिक व्यवस्था (Central Administration)

मध्यकाल में राज्य का सर्वोच्च अधिकारी **राजा** होता था, जो सैद्धांतिक रूप से दैवीय अधिकारों से युक्त माना जाता था। उसकी सहायता के लिए प्रमुख अधिकारी निम्नलिखित थे:

1. **प्रधान (दीवान):** राजा के बाद शासन का सबसे महत्वपूर्ण पद। यह वित्त और नागरिक प्रशासन का प्रमुख होता था। मेवाड़ में इसे 'प्रधान' और मारवाड़-जयपुर में 'दीवान' कहा जाता था।
2. **बख्शी:** यह सेना विभाग का प्रमुख था। इसका कार्य सैनिकों की भर्ती, रसद व्यवस्था और सामंतों की सेना का निरीक्षण करना था।
3. **खानसामा:** राजपरिवार की घरेलू आवश्यकताओं, महल की सुरक्षा और भंडार गृह की देखभाल करने वाला अधिकारी।
4. **कोटवाल:** नगर की शांति व्यवस्था और पुलिस प्रशासन का प्रमुख।
5. **खजांची:** राजकीय कोष (खजाने) का प्रबंधन करने वाला अधिकारी।

2. सामंती व्यवस्था (Jagirdari/Feudal System)

कर्नल जेम्स टॉड ने राजस्थान की सामंती व्यवस्था की तुलना यूरोपीय 'फ्यूडलिज्म' से की है, लेकिन **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** और अन्य विद्वान इसे रक्त संबंध पर आधारित **'भाई-बंट'** व्यवस्था मानते हैं।

जागीरों के प्रकार:

- **हुकूमत (राजकीय) जागीर:** वे जागीरें जो राजा के सीधे नियंत्रण में होती थीं।
- **सामंत जागीर:** राजा द्वारा अपने भाइयों और सगे-संबंधियों को दी गई भूमि।
- **शासन (पुण्य-पार्थ):** ब्राह्मणों, चारणों और मंदिरों को दान में दी गई भूमि (यह कर-मुक्त होती थी)।
- **भोम:** भोमियों को उनकी विशिष्ट सैन्य सेवा या गाँव की रक्षा के बदले दी गई भूमि।

सामंती कर और सेवाएँ:

1. **रेख:** जागीर की अनुमानित वार्षिक आय। इसके दो प्रकार थे- 'पट्टा रेख' (पट्टे में दर्ज आय) और 'भरत रेख' (वास्तविक भुगतान)।
2. **चाकरी:** सामंत को राजा की सेवा में निश्चित संख्या में घुड़सवार और पैदल सैनिक भेजने होते थे।
3. **तलवार बंधाई:** नए सामंत के गद्दी पर बैठने के समय राजा को दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क। (इसे 'हुक्मनामा' या 'कैद खालसा' भी कहा जाता था)। जैसलमेर में यह कर नहीं लिया जाता था।

3. राजस्व व्यवस्था (Revenue System)

राजस्व का मुख्य स्रोत **कृषि (भू-राजस्व)** था। भूमि को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा गया था: **खालसा** (सीधे राजा के नियंत्रण वाली) और **जागीर** (सामंतों के अधीन)।

लगान निर्धारण की पद्धतियाँ:

1. **लाटा (Latai):** फसल कटने के बाद खलिहान में अनाज का हिस्सा बांटना।
2. **कुंता (Kunta):** खड़ी फसल के आधार पर अनाज के हिस्से का अनुमान लगाना।
3. **बंटाई:** उपज का एक निश्चित भाग (जैसे 1/3 या 1/4) सरकार को देना। इसके तीन प्रकार थे: खेत-बंटाई, लंक-बंटाई और रास-बंटाई।
4. **गूगरी:** बीज के बदले लिया जाने वाला अनाज।

4. लाग-बाग (Cesses and Minor Taxes)

किसानों से भू-राजस्व के अतिरिक्त कई अन्य कर भी लिए जाते थे, जिन्हें 'लाग-बाग' कहा जाता था। इनकी संख्या लगभग 84 तक पहुँच गई थी।

- **खड़ड़ा:** पशुओं के चारे पर लगने वाला कर।
- **सिंघोती:** मवेशियों (पशुओं) के क्रय-विक्रय पर कर।
- **आपाणी/जभाणी:** सिंचाई पर लगने वाला कर।
- **ज्याफत:** राजा के जागीर में आने पर सामंत या प्रजा द्वारा दिया जाने वाला भोज खर्च।
- **त्याग:** विवाह के अवसर पर चारणों और भाटों को दी जाने वाली राशि।

5.विश्लेषण: राजस्थान की प्रशासनिक विशिष्टता

राजस्थान की मध्यकालीन व्यवस्था यूरोप की दासता-आधारित व्यवस्था से भिन्न थी। यहाँ सामंत राजा का 'सेवक' नहीं बल्कि 'सहयोगी' या 'छोटा भाई' माना जाता था। "राजा प्रथम श्रेणी का सामंत था।" मुगलों के प्रभाव से बाद में 'पट्टा प्रणाली' और 'मनसबदारी' के तत्व आए, जिससे राजा की शक्ति बढ़ी और सामंतों की स्वायत्तता कम हुई। 1818 की संधियों के बाद इस व्यवस्था का पारंपरिक स्वरूप पूर्णतः नष्ट हो गया और यह शोषणकारी बन गई।

6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **नोट (बिजोलिया आंदोलन):** अत्यधिक 'लाग-बाग' (84 प्रकार) ही बिजोलिया किसान आंदोलन का मूल कारण बना था।
- **विरोधाभास (तलवार बंधाई):** पृथ्वी सिंह (बिजोलिया के राव) ने 1906 में तलवार बंधाई कर लगाया था, जिसका किसानों ने भारी विरोध किया। अलग-अलग रियासतों में इसकी दरें भिन्न थीं।
- **प्रशासनिक इकाई:** राज्य को **'परगना'** में बांटा जाता था। परगना का मुख्य अधिकारी **'हाकिम'** कहलाता था। परगना के नीचे 'गाँव' सबसे छोटी इकाई थी।

7. प्रशासनिक शब्दावली (त्वरित संदर्भ तालिका)

पद/शब्द	कार्य/अर्थ
मुतद्दी	दीवान का सहायक या नागरिक अधिकारी
सायरी	व्यापारिक वस्तुओं पर लगने वाला सीमा शुल्क (चुंगी)
दापा	कन्या पक्ष से लिया जाने वाला शुल्क
इजारा	राजस्व वसूली का ठेका देने की पद्धति
पोतदार	खजाने की आय-व्यय का हिसाब रखने वाला

अध्याय 7: शासन प्रणाली, सामंती व्यवस्था और राजस्व ढांचा - ऐतिहासिक साक्ष्य

केंद्रीय प्रशासन: दीवान व बख्शी
राजा के सहायक मुख्य अधिकारी।
वित्त व सैन्य प्रमुख। (सोत: मेवाड़ पेंटिंग)

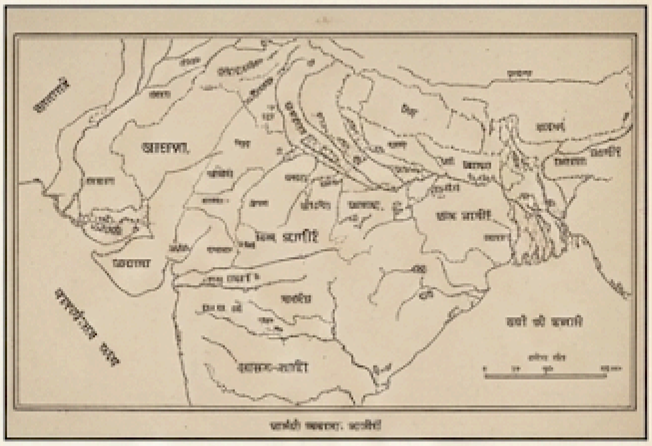

सामंती व्यवस्था: जागीरों के प्रकार
रक्त संबंध पर आधारित 'भाई-बंट'। खालसा, सामंत, शासन (कर-मुक्त), भोम जागीरें।

सामंती कर: तलवार बंधाई (उत्तराधिकार शुल्क)
नए सामंत के गद्दी पर बैठने पर राजा को दिया जाने वाला कर। (सोत: जयपुर शैली)

राजस्व व्यवस्था: लाटा-कुंता व बंटाई
भू-राजस्व निर्धारण की पद्धतियाँ। खलिहान में अनाज बंटवारा। (सोत: मारवाड़ शैली)

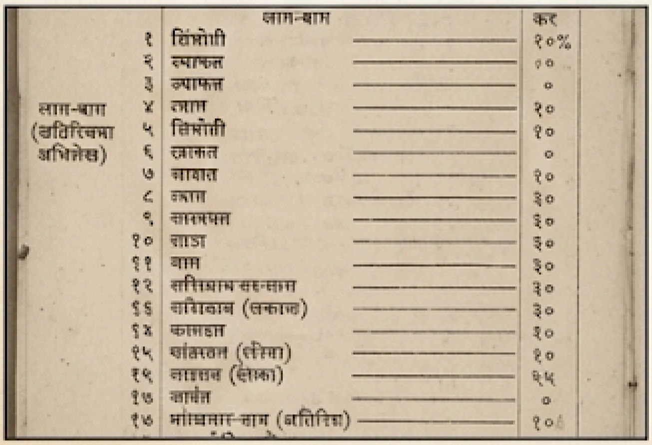

		लाग-बाग	कर
लाग-बाग (अतिरिक्त अभिलेख)	१	सिंघोती	१०%
	२	ज्याफत	१०
	३	ज्याफत	०
	४	त्याग	१०
	५	सिंघोती	१०
	६	[illegible]	०
	७	[illegible]	१०
	८	[illegible]	३०
	९	[illegible]	३०
	१०	[illegible]	३०
	११	[illegible]	३०
	१२	[illegible]	३०
	१३	[illegible]	३०
	१४	[illegible]	३०
	१५	[illegible]	१०
	१६	[illegible]	६५
	१७	[illegible]	०
	१८	[illegible]	१०

लाग-बाग (अतिरिक्त कर)
किसानों से लिए जाने वाले 84 प्रकार के कर।
सिंघोती, ज्याफत, त्याग आदि।
(सोत: बिजोलिया अभिलेख)

संदर्भ सूची:

1. *राजस्थान का इतिहास* - डॉ. गोपीनाथ शर्मा।
2. *राजस्थान का प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक इतिहास* - हुकुम चंद जैन।
3. *राजस्थान की सामंती व्यवस्था* - बृज किशोर शर्मा।
4. *मेवाड़ का इतिहास* - डॉ. ओझा।
5. *RBSE कक्षा 12 - राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति*।
6. आरबीई (RBSE) कक्षा 12 - भारत का इतिहास (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)।
7. *राजस्थान का इतिहास, संस्कृति एवं परंपरा* - हुकुम चंद जैन एवं नारायण माली।
8. *राजस्थान अध्ययन* - कक्षा 10 (RBSE)।
9. राजस्थान अध्ययन - कक्षा 9 व 10 (RBSE)।